आदिवासियों के मसीहा–मोतीलाल तेजावत का आदिवासी जनजातियों के उत्थान में योगदान

वैभव इणखिया (पीएच.डी. शोधार्थी, इतिहास)

एम.ए., एम.फिल, नेट (इतिहास)
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

सार–

''आदिवासियों के मसीहा'' नाम से चर्चित, वनवासी संघ के स्थापना करने वाले और एकी आन्दोलन चलाकर आदिवासियों, किसानों और कामगारों को सामन्ती अत्याचारों के खिलाफ एकजूट करने वाले मातीलाल तेजावत 1886 ई. में झाड़ोल, उदयपुर के कोल्यारी में जन्मे थे। पांचवी तक शिक्षा गांव से प्राप्त की थी। इनके प्रयासों से ही किसानों से बेगार प्रथा के रूप में काम करवाना बंद किया गया और कामगारों को उचित वेतन दिलवानें में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। निमड़ा गांव (विजयनगर, गुजरात) में 7 मार्च, 1922 को एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में मेवाड़ भील कोर के कमाण्डर मेजर एच.जी. शर्टन ने गोलीबारी का आदेश देने पर यहां भीषण जनसंहार हुआ जिसमें 1200 भील आदिवासी मारे गए इसीलिए यह 'नीमड़ा हत्याकाण्ड' के नाम से जाना जाता है। तेजावत ने गरासिया जनजाति के विकास व उत्थान का कार्य किया था। मोतीलाल तेजावत राजस्थानी खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष भी बने। इनकी मृत्यु 5 दिसम्बर, 1963 ई. को हुई थी।

मुख्य शब्द *– आदिवासी, ठिकाना, सामन्त, मसीहा, वनवासी, एकी, बेगार, कामगार, नरसंहार, अंधाधुंध, फरारी, भोमट, सत्याग्रह आदि।*

परिचय–

मोतीलाल तेजावत का आविर्भाव (1886–1963 ई.)–

मोतीलाल तेजावत राजस्थान में एकी आन्दोलन के नेता थे। राजस्थान के आदिवासी सीमावर्ती क्षैत्र से सम्बन्धित थे और यहां पर आन्दोलन करते रहते थे।

मोतीलाल तेजावत का जन्म 8 जुलाई, 1886 ई. को कोल्यारी गांव झाड़ोल तहसील (उदयपुर) के ओसवाल जैन परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दलाल एवं माता का नाम केशर बाई था। इन्होंने गांव में ही सामान्य शिक्षा प्राप्त की और हिन्दी, उर्दू एवं गुजराती भाषाओं का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया। प्रारम्भिक शिक्षा झाड़ोल से प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने यहां पर ही झाड़ोल ठिकाने के जमीदार के यहां पर कामगार के रूप में कार्य करने लग गए। यहां पर कार्य करते समय यहां पर स्थानीय लोगों जिनमें अधिकतर भील जाति के थे, पर स्थानीय ठाकुरों एवं सामंतों द्वारा दमनकारी व्यवहार और अत्याचारों को देखते हुए इन्होंने झाड़ोल ठिकाने के यहां

से नौकरी से इस्तीफा दे दिया। मोतीलाल तेजावत 'आदिवासियों के मसीहा' नाम से प्रसिद्ध थे। इन्होंने 'वनवासी संघ' की स्थापना की थी। भीलों, किसानों और गरासियों पर सामंतों द्वारा अत्याचार करने पर इन्होंने इन सभी को सामन्तो व ठाकुरों के खिलाफ संगठित किया। इन्होंने 1920 ई. में चितौड़गढ़ जिले के 'मातृकुण्डियां' नामक स्थान पर आदिवासी हितों को लेकर 'एकी आन्दोलन' की शुरूआत की। इन्होंने भील, गरासियों और खेतिहर मजदूरों व किसानों पर होने वाले सामन्ती अत्याचारों का विरोध कर इनको एकजूट करने का प्रयास किया।

राजस्थान के मेवाड़ क्षैत्र में मोतीलाल तेजावत ने अपना पूरा जीवन सेवा में लगा दिया था। मोतीलाल तेजावत ने किसानों के मुद्दों पर 'मेवाड़' नामक पुस्तक लिखी थी, इनके प्रयासों से किसानों से ली जाने वाली बेगार प्रथा बंद करवाई गयी और मजदूरों और कारीगरों को उचित कीमत दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, आपने हजारों किसानों के साथ मिलकर वैशाख पूर्णिमा के दिन उदयपुर आकर महाराणा फतेहसिंह से मिलकर किसानों की मांगों को उनके सामने रखा था।

मोतीलाल तेजावत का योगदान–

1. **एकी आन्दोलन (1920 ई.)–** मोतीलाल तेजावत द्वारा 1920 ई. में आदिवासियों के हितों को लेकर चितौड़गढ़ जिले के 'मातृकुण्डिया' नामक स्थान से 'एकी आन्दोलन' की शुरूआत की।

गोगुन्दा, कोटड़ा और झाड़ोल क्षैत्रों के भीलों व गरासियों जनजाति द्वारा बिजोलिया किसान आन्दोलन से प्रभावित होकर इस 'एकी आन्दोलन' को शुरू किया था।

एकी आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य आदिवासी किसानों और भीलों में पूर्ण एकता स्थापित करना था। इन्होंने भोमट क्षैत्र के गांव–गांव जाकर के एकी आन्दोलन के उद्देश्यों का प्रचार किया। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से जाकर आदिवासियों को समझाया कि किस प्रकार से आप शोषण के खिलाफ एकजुट होकर लड़ सकते हो। मोतीलाल तेजावत ने 'मातृकुण्डियां' का स्थान इसलिए चुना क्योंकि इस स्थान पर आयोजित मेले में हजारों की संख्या में किसान एकसाथ एकत्रित होते है, अपार जनसमूह यहा पर आता है। एकी का मतलब एकता का व्रत लोगों को समझाया। आन्दोलन का लक्ष्य एकता रखा गया। मोतीलाल तेजावत का नेतृत्व निर्मल था, तेजावत ने सर्वप्रथम झाड़ोल के पांच व्यक्तियों द्वारा आन्दोलन में सहयोग करने के लिए तैयार किए थे–1. नीला शंकर (ब्राह्मण), 2 बाला (लुहार), 3. किशन जोशी, 4. लच्छीराम (साधू), 5. अम्बावा (कुम्भार)।

इनको साथ लेकर सदैव एक होकर एकजुट रहेंगे का व्रत लिया गया। मोतीलाल तेजावत को 'आदिवासियों को मसीहा' कहते है व आदिवासी इन्हें 'बावजी' नाम से पुकारते थे।

बदराना की प्रथम बैठक 1921 ई. और द्वितीय बैठक में भीलों ओर आदिवासियों को संगठित रहने के लिए कहा गया और महाराजा को एकीकृत ज्ञापन ''मेवाड़ पुकार'' सौंपा गया। आपने उदयपुर आकर महाराणा फतेहसिंह से मिलकर 21 कलमें लगान और बेगार प्रथा से सम्बन्धित दस्तावेज प्रस्तुत किए, जिनमें महाराणा ने 18 कलमें लगान माफ कर दिया, इनको 'मेवाड़ पुकार'

कहा जाता है। लेकिन महाराजा ने 3 मांगे खारित कर दी। लेकिन मोतीलालजी पूरी मांगे नहीं मानने पर संतुष्ट नहीं थे।

2. पाल दाधवाव गांव की घटना (नीमड़ा हत्याकाण्ड)–

7 मार्च, 1922 ई. को आदिवासी नेता मोतीलाल तेजावत हजारों की संख्या में एकत्र हुए, भील आदिवासियों को सम्बोधित कर रहे थे जो कि सभी 'एकी आन्दोलन' से सम्बन्धित थे। इस सभा में सांमतों से सम्बन्धित कानूनों, अंग्रेजी सरकार द्वार शुरू रजवाड़ो से सम्बन्धित कानूनों और भू–राजस्व सम्बन्धित कानूनों का विरोध किया गया। इस दौरान नाराज अधिकारी सूरजी निनामा के आदेश के दौरान मेजर एच.जी. शर्टन ने अंधाधुंध गोलियां चलाई। इस गोलीबारी में निहत्थे 1200 से ज्यादा किसानों और वहां पर एकत्रित लोगों की मौत हो गई। इस नरसंहार के दौरान कई लोग गांव के एक कुंए में कूद पड़े थे, यहा पर यह कुंआ पूरा लाशों से भर गया था। इस हत्याकाण्ड को जलियावाला बाग हत्याकाण्ड से भी विभत्व कहा गया है।

इस हत्याकाण्ड के बाद भी मोतीलाल तेजावत ने आन्दोलन को जारी रखा, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल रखा।

3. सिरोही भील आन्दोलन (1922 ई.)

मोतीलाल तेजावत ने 1922 ई. में सिरोही के भीलों और गरासियों को एकता रखने के लिए प्रेरित किया। गरासियों ने मुंगथला के थाने को घेर कर नष्ट कर दिया, भीलों और गरासियों ने बिना राज्य को कर दिए तिलहन की फसल उठा ली थी। सिरोही में भील और गरासिया जनजाति तेजावत को 'मेवाड़ का गांधी' नाम से पुकारती है। मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थान 24 अप्रैल, 1929 को हुई थी। अंग्रेजों ने मोतीलाल तेजावत के खिलाफ फरारी का ओदश जारी कर दिया, कई दिनों तक यह छिपते रहे। मोतीलाल तेजावत 1929 ई. तक गुप्त स्थान पर रहे। लेकिन बाद में महात्मा गांधी के कहने पर इन्होंने 1929 ई. में अंग्रेजों के सामने आत्म समर्पण कर दिया था। 7 वर्ष जेल मे रहे। जेल से रिहा होने के बाद इन्होंने 1938 ई. में प्रजामण्डल आन्दोलनों में भाग लिया, इसके बाद इन्होंने सत्याग्रह में भाग लिया और 1942 ई. में इन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था जिस कारण इन्हें अगस्त 1942ई. में गिरफ्तार कर लिया गया। आपको ईसवाल जेल में रखा गया, बाद में जेल से रिहा हुए और अंग्रेजों द्वारा आप पर उदयपुर से बाहर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस प्रकार आप लगातार अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करते रहे।

तेजावत की गिरफ्तारी पर एक कवि ने दौहा कहा –

भोमट भानु ने तुरंत, दियो जेल मे भेज ।
हिन्दू रवि नही सह सक्यो, तेजावत रो तेज।।

निष्कर्ष–

मोतीलाल तेजावत के आते ही राजस्थान के मेवाड़ और अन्य रियासतों के आदिवासी और किसान जो कि सदियों से शोषण व उपेक्षा के शिकार हो रहे थे, जाग उठे, उनमें एक चेतना का

संचार हुआ। आदिवासियों को जागृत करने का पूरा श्रेय इनको जाता है। इन्होंने पूरी जनजाति को जागृत कर अलख जगाने का काम अपने कंधों पर उठा लिया था।

1948 ई. में मोतीलालजी पाल दाधवाव गांव (विजयनगर) गए। उस स्थान पर भी गए जहां मेजर एच.जी. शर्टन द्वारा गालीबारी की गई थी, उस स्थान का नाम 'वीर भूमि' रखा। तेजावत भीलों के 'बावजी' नाम से प्रसिद्ध थे। रियासती जनता पर अत्याचारों का सुत्रपात में तिहरी गुलामी के शिकंजे में होती थी। सबसे ऊपर अंग्रेज थे, इनको खुश रखने के लिए रियासतों के स्वामी प्रजा पर अत्याचार करते थे और इनके नीचे जागीरदार थे जो अपने ऊपर के दोनों वर्गों को प्रसन्न रखने के लिए गरीब जनता पर अत्याचार करते थे। इस कारण जनता में असंतोष बढ़ता गया। जन जागृति की अलख जगाने वाले क्रांतिवीर श्री मोतीलाल तेजावत ने आदिवासियों और गरासियों के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, उन्हें संगठित करके अत्याचारों से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

आज सम्पूर्ण राजस्थान व मेवाड़ में जो राजनैतिक व सामाजिक जागृति देखी जाती है उसका अधिकांश श्रेय मोतीलालजी को जाता है। इनका राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में अग्रणी स्थान है।

प्रस्तुत शोध पत्र में तेजावत से सम्बंधित अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ताकि मोतीलालजी के सही व्यक्तित्व को आंका जा सके, स्वाधीनता संग्राम व जन–चेतना जागृत करने में इनका योगदान अतुलनीय रहा है।

आज भी पाल–दाधवाव हत्याकांड को शादियों ओर मेलो मे हम गीतों के रूप मे सुनते हे ऐसा ही एक गाना है– ''हंसु दुखी, दुनिया दुखी''

सत्य के पुजारी मोतीलाल तेजावत के चरित्र की यह एक ऐसी विशेषता थी कि उन्होंने सत्य ओर अहिंसा का साथ कभी नही छोड़ा था चाहे कितनी भी समस्याऐ उत्पन्न हो हमेशा सत्य के पथ पर अडिग रहे।

इनका निधन 5 दिसम्बर 1963 ई. को हो गया था। भील आज भी तेजावत को श्रद्धा से 'मोती बावसी' कहते है।

संदर्भ ग्रथ सूची (Bibliography) –

1. पालीवाल, देवीलाल–मेवाड़ का एकी आन्दोलन ओर मोतीलाल तेजावत, मधुमति, 1966
2. शर्मा, शान्ति कुमारी–राजस्थान मे स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा मोतीलाल तेजावत, राजस्थान स्वर्ण जयंती समिति जयपुर, 2002
3. जोशी, सुमनेश–राजस्थान मे स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, हेमा प्रिन्टर्स, जयपुर
4. कांकरिया, प्रेमसिह– भील क्रांति के प्रेणेता : मोतीलाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1985
5. प्रसाद, संजय, वडेला अरूण–गुजरात के आदिवासी आन्दोलन का इतिहास, 2019

6. यादव, कमल–देशी रियासतों मे राजनैतिक चेतना ओर जन–आन्दोलन, जयपुर,1993
7. शर्मा, रामगोपाल–राजस्थान मे प्रजामंडल आन्दोलन, जयपुर, 2002
8. राजपुरोहित, नरसिंह–भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे राजस्थानी कवियों रो योगदान, जोधपुर, 1988
9. कमल एवं जैन–भारतीय स्वाधीनता संग्राम एवं राजस्थान के जन–आन्दोलन
10. शर्मा, ब्रजकिशोर–राजस्थान मे किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थानी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013
11. जैन, संतोष कुमारी–आदिवासी भील–मीणा, 1981
12. परिहार, विनिता–राजस्थान मे प्रजामंडल आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013